पंडिताइनें–एक बदलती परंपरा

सुहास कुमार

तोड़-तोड़ के बंधनों को देखो बहनें आती हैं
आओ देखो लोगों देखो बहनें आती हैं
तारीकी को तोड़ेंगी वो खामोशी को तोड़ेंगी
मोहताजी और डर को ले मिलकर पीछे छोड़ेंगी
हां मेरी बहनें अब हर घर को महकाएंगी।

जिन पुरुष-क्षेत्रों में महिलाएं प्रवेश कर चुकी हैं उनमें से एक है पंडिताई क्षेत्र। ज्योति बा-सावित्री फूले, महर्षि कर्वे, पंडिता रमा बाई, सर्वश्री अगरकर के प्रदेश महाराष्ट्र में महिलाओं ने पहल की है तो इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

पूना की पहली पंडिताइन हैं शुभदा जोग, उम्र 65 साल। 45 साल की उम्र से पंडिताई कर रही हैं। 1975 से शुरू हुआ यह सिलसिला इतना फैल चुका है कि पूरे महाराष्ट्र में आज 5 हज़ार पंडिताइनें हैं। कर्नाटक, गोवा और गुजरात में भी यह परंपरा फैल चुकी है। सुश्री शुभदा जोग ही 500 पंडिताइनों को प्रशिक्षण दे चुकी हैं। शुरू में पुरुष-पंडितों का विरोध था, लेकिन स्त्रियां जंग में कामयाब रहीं।

22 साल पहले पूना के पुजारी श्री शंकर थाटे को वहां पुजारियों की कमी का अहसास हुआ। पंडितों के तमाम नखरे थे। वे पैसे भी बहुत मांगने लगे थे। उन्होंने 1975 में "शंकर सेवा समिति" बनाई और शुरू हुआ पंडिताइनों का प्रशिक्षण। डेढ़ सौ महिलाओं ने दाखिला लिया। चार महीने बाद केवल 12 औरतें परीक्षा में पास हुईं। फिर उन्हें श्लोकों और मंत्रों के लेखन आदि का कोर्स भी करना पड़ा। फिर तो जत्थे के जत्थे तैयार होते गए।

पंडिताइनें शादी-ब्याह, गृह प्रवेश, हर तरह के हवन यज्ञ-नवचंडी यज्ञ, गायत्री यज्ञ, विष्णु यज्ञ, महारुद्र यज्ञ, सप्तशति और शांतिपाठ, वास्तुशांत, उदक शांत, पुत्र-पौत्र दर्शन, व्रत उद्यापन, बुरे

नक्षत्रों की शांति वगैरह धार्मिक कामों में महारत हासिल करती हैं।

शुमर्द जोग अपने अनुभव बताती हैं "जब तक महिलाएं घरों, बंद कमरों में पूजा करती रहीं, रत्ती भर भी विरोध नहीं उठा। जब दूसरे घरों में पूजा-पाठ करवाने जाने लगीं तो विरोध का समुद्र उमड़ पड़ा। एक बार पूना के औंकारेश्वर मंदिर में 15-20 पंडिताइनें महारूद्र पाठ का जाप कर रही थीं। पंडितों ने पंडिताइनों को टोका, पर उन्होंने जाप ज़ारी रखा। पंडितों ने पुलिस बुला ली। श्री थाटे की बहस के सामने पुलिस को भी लौटना पड़ा। उन्होंने कहा कि धर्मशास्त्रों में महिलाओं को धर्मकांड करने की मनाही नहीं है।

शादी ब्याह, मुंडन, गृह-प्रवेश आदि में तो वहां महिलाओं ने गद्दी संभाल ही ली है, अब वे श्राद्ध और दाह-संस्कार करवाने की भी तैयारी में हैं। पंडिताइनों ने विदेश-यात्रा भी की है। 1893 में ये स्विटज़रलैंड के ओंकारनाथ आश्रम में पूजा पाठ कराने गईं। इससे उनकी ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हुई। चार महीने का विदेशी यात्रा का इंतज़ाम लंदन के गुजराती समाज ने किया था। जब भारतीय यूरोपीय समाज को इनके वहां जाने का पता लगा तो इनको बहुतों ने पूजा पाठ के लिए बुलाया। अंग्रेज़ों ने भी उन्हें इज्ज़त दी। महाराष्ट्र में पूना के अलावा सांगली, नासिक, सतारा, कराड़, कोल्हापुर, औरंगाबाद, हड़पसर वगैरह शहरों में काफ़ी पंडिताइनें हैं।

पंडिताइनों को लोगों ने इसलिए पसंद किया –

1. वे समय की पाबंद थीं।

2. मंत्रों को शुद्ध ढंग से पढ़ती थीं।
3. दक्षिणा पर अड़ती नहीं थीं।
4. हरेक मंत्र का अर्थ अच्छी तरह समझाती थीं।

जो लोग सच्ची पूजा में विश्वास रखते हैं वे महिला-पंडितों को बुलाने में हिचकिचाते नहीं हैं। शुभदा जोग से किसी ने पूछा कि सब धार्मिक कांड करवाते समय कभी आपको लगा कि आप पुरुष होतीं? उनका जवाब था "महिला होना ही पसंद है। आज महिला में इतना दम है कि वह अपना हक़ मांगती है। हमें खुशी है कि धर्म का प्रचार-प्रसार, कार्य भार समाज ने हम स्त्रियों के हाथ सौंपा है। पहले हम अपने घरों में यह करते थे आज पूरी बाहरी दुनिया में कर रहे हैं।"

हमें इंतज़ार है कि यह परंपरा उत्तर भारत में कब शुरू होगी। □